Maa Jawalamalini Durga Pryoga

।।दिव्यदृष्टिप्रद एवं सर्वबाधामुक्ति माँ ज्वालामालिनी प्रयोग।।

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

महातंत्रा भगवती दुर्गा की उपासना से सर्व दुर्लभ सिद्धियों को सिद्ध किया जा सकता है। दुर्गातंत्र शीघ्र सिद्धिप्रदाता है। जिसमें ज्वालामालिनी सिद्ध एवं उच्चस्तरीय साधना है। सर्वविघ्न एवं व्याधियों से रक्षा हेतु यह स्तोत्र अति उत्तम है। इस प्रयोग से परकृत्या, विशेष शत्रुपीड़ा, असाध्यचरोग, तथा क्रूरग्रहों की मारकदशा से साधक की रक्षा होती है। स्तोत्र के 108 पाठ नित्य 31 या 41 दिन विधिपूर्वक करें। पूर्णिमा, नवरात्र, दीपावली या अष्टमी से प्रयोगारम्भ करें। धनबाधा या आर्थिक हानि में भी यह प्रयोग श्रेष्ठ है। इसके लिये स्तोत्र के आदि एवं अन्त में श्रीसूक्त से भगवती का पूजन करें। यह स्तोत्र त्रिकाल ज्ञान एवं दिव्यदृष्टि के लिये भी कथित है, परन्तु त्रिकालज्ञता प्राप्त करना इतना सरल नहीं है। इसके लिये सम्पूर्ण विधान के साथ विशेष संख्या में जप करने की आश्यकता होती है। इसके उपरान्त् साधक की योग्यता व आवश्यकता के अनुसार ही ऐसी विद्याएं देवता साधक को प्रदान करते हैं। सर्वज्ञ की कृपा के बिना कोई सर्वज्ञ नहीं हो सकता। प्रचलित सामग्रियों से देवी का पूजनार्चन करने के पश्चात् साधनारम्भ करें।

पीठसिंहासन देवता व उनकी शासिका यवनी देवी का आवाहनः-

ॐ नमो भगवते ब्रह्मानन्द पदः गोलोकादि असंख्या ब्रह्माण्ड भुवन नाथाय शशांक शंख गोक्षीर कर्पूर धवल गात्राय नीलांभोधि जलद पटलाधिव्यक्तस्वरूपाय व्याधिकर्म निर्मूलोच्छेदन कराय, जाति जरायमरण विनाशनाय, संसारकान्तारोन्मूलनाय, अचिन्त्य बल पराक्रमाय, अतिप्रतिमाह च्रकाय त्रैलोक्याधीश्वराय, शब्दैके त्रैलोक्याधिनखिल भुवनकारकाय, सर्वसत्यहिताय, निजभक्ताय, अभीष्ट फलप्रदाय, भक्त्याधीनाय सुरासुरेन्द्रादि मुकुटकोटि धृष्टवाद पीठाय, अनन्त युगनाथाय, देवाधिदेवाय, धर्मचक्राधीश्वराय, सर्वविद्या परमेश्वराय, कुविद्या विघ्नप्रदाय, निर्विघ्न कारकाय तत्पादपंकजाश्रयानि यवनी देवी शासन देवते।

।।स्तोत्रम्।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिभुवन संक्षोभनी, त्रैलोक्य शिवापहारकारिणीं श्रीअद्भुत जातवेदा श्री महालक्ष्मी देवी (अमुकस्य) स्थावर जंगम कृत्रिम विषमुख संहारिणीं सर्वाभिचार कर्मापहारिणी परविद्योछेदिनी परमंत्र प्रनाशिनीं अष्टमहानाग कुलोच्चाटनीं कालदंष्ट्र-मृत-कोत्यापिनीं (अमुकस्य) सर्वरोग प्रमोचनी, ब्रह्माविष्णु रुद्रेन्द चन्द्रादित्यादिग्रह नक्षत्रोत्पात मरणभय पीड़ा मर्दिनी, त्रैलोक्य विश्वलोक वंशकरि भुविलोक हितकं महाभैरवि भैरव शस्त्रोपधारिणी रौद्रे, रौद्ररूपधारी प्रसिद्धे, सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरुड गंधर्व किन्नर किं पुरुषो दैत्यारगेन्द्र पूजिते ज्वालापात कराल दिगन्तराले महावृषभ वाहिनी,

खेटक, कृपाण, त्रिशूल शक्ति, चक्र पाश शरासन शिव विराजमान षोडशार्द्ध भूजे एहि एहि लं ज्वालामालिनीं ह्रीं ह्रीं ह्रं ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः देवान् आकर्षय-आकर्षय, नागग्रहान् आकर्षय आकर्षय, यक्षग्रहान् आकर्षय आकर्षय, गन्धर्वग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, भूतग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, दिव्यतरग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, चतुर्राशि जैन्यमार्गग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, अखिलमुंडितग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, जंगमग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, दुर्गेशादि विद्यग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, सर्वनग निग्रहवासीग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, सर्वनगनिग्रहवासीग्रहान आकर्षय-आकर्षय, सर्व जलाशयवासीग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, सर्वस्थलवासीग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, सर्वातस्थितग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, सर्वश्मशान वासीग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, सर्वपवनीवासीग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वधर्मशापादिशापग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, सर्वगिरिगुहा दुर्गवासी ग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, श्रापित् ग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, सर्वदुष्टग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, सर्वनाथपंथीग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वभूवासी प्रेतग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, वक्रपिंडग्रहान् आकर्षय-आकर्षय, कट-कट, कंपय-कंपय, शीर्षं चालय शीर्षं चालय, गात्रं चालय गात्रं चालय, बाहुं चालय बाहुं चालय, पादं चालय पादं चालय, करपल्लवान चालय करपल्लवान चालय, सर्वांग चालय सर्वांग चालय, लोलय-लोलय, धुन-धुन, कंपय-कंपय, शीघ्रं भव तारय-तारय, ग्रहि-ग्रहि, ग्राह्य-ग्राह्य, अक्षय-अक्षय, आवेशय

आवेशय, ज्वलूं ज्वालामालिनीं ह्रां क्रीं ब्लूं द्रां द्रां ज्वल-ज्वल रं रं रं रं रं रं रं रं प्रज्जवल-प्रज्ज्वल, धग-धग, धूमाक्षकरणी ज्वल विशोषय-विशोषय।

देवग्रहान् दह-दह, नागग्रहान् दह-दह, यक्षग्रहान् दह-दह, गंधर्वग्रहान् दह-दह, ब्रह्मग्रहान् दह-दह, राक्षसग्रहान् दह-दह, भूत ग्रहान् दह-दह, दिव्यन्तरग्रहान् दह-दह, चतस्राशि जन्यमार्ग ग्रहान् दह-दह, चर्तुविश जिन ग्रहान् दह-दह, सर्वजटिल ग्रहान् दह-दह, अखिल मुंडित ग्रहान् दह-दह, जंगम ग्रहान् दह-दह, सर्व दुर्गेशादि विद्या ग्रहान दह-दह, सर्वनगनिग्रहवासी ग्रहान् दह-दह, सर्वस्थलवासी ग्रहान् दह-दह, सर्वान्तरिक्ष वासी ग्रहान् दह-दह, श्मशानवासी ग्रहान् दह-दह, सर्व पवनहार्त ग्रहान दह-दह, सर्वधर्मशापादि गोशापवासी ग्रहान् दह-दह, सर्वगिरिगुहा दुर्गवासी ग्रहान दह-दह, शापित ग्रहान् दह-दह, सर्वनाथ पंथि ग्रहान् दह दह, सर्वभूवासी प्रेतग्रहान् दह-दह, (अमुक गृहे) असद्गति ग्रहान् दह-दह, वक्रपिण्ड ग्रहान् दह-दह, सर्वदुष्ट ग्रहान् दह-दह, शतकोटि योजने दोषदायी ग्रहान् दह-दह, सहस्र कोटि दोष दह-दह, आसमुद्रात् पृथ्वी मध्ये देवभूत पिशाचादि (अमुकस्यो) परिकृत दोषान् तस्य दोषान् दह-दह, शत्रुकृतभिचार दोषान दह-दह, धे धे स्फोटय स्फोटय, मारय-मारय, धगि-धगि, धागय मुखे ज्वालामालिनी ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रं ह्रों ह्रः सर्वग्रहाणां हृदये दह-दह, पच-पच, छिंधि-छिंधि, भिंदि भिंदि, दह-दह, हा-हा, स्फुट-स्फुट, थे-थे।

क्षम्लुं क्षां क्षीं क्षुं क्षैं क्षौं क्षः स्तंभयः म्म्लूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भैं भौं भ्रः बाडय बाडय। म्म्लूं म्रां म्रीं म्रूं मैं म्रौं म्रः नेत्रं स्फोटय-स्फोटय दर्शय-दर्शय। यूम्लुं यां यीं यूं यैं यौं यः प्रेषय-प्रेषय। घ्मलुं घ्रां घ्रीं घ्रुं घ्रैं घ्रौं घ्रः जठरं भेदय-भेदय। ग्मलूं ग्रां ग्रीं ग्रुं ग्रैं ग्रौं ग्रः मुखं बंधयः बंधयः। रक्युं खां खीं खुं खैं खौं खः ग्रीवां भंजयः भंजयः। छप्लुं छां छीं छूं छैं छौं छः अंत्रान् भेदयः भेदयः। द्रप्लुं द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः महाविद्युत्पामाणास्त्रहन। व्मपुं व्रां व्रीं व्रूं व्रैं व्रौं व्रः समुद्रे मंजय मंजय। दम्पुं द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः सर्व डाकिनीं सुन्दरीं मर्दयः मर्दयः सर्वं योगिनी स्वज्जैय-स्वज्जैय। सर्व शत्रुं ग्रासय-ग्रासय, खं खं खं खं खं खं खं खादय-खादय, सर्वदैत्यान् विध्वंसय-विध्वंसय, सर्व मृत्युं नाशय-नाशय, सर्वोपद्रवान् स्तंभय-स्तंभय। जः जः जः जः जः जः जः ज्वरान् दह-दह, पच-पच, घुमु-घुमु, घुरु-घुरु, खरु खरु, खड्ग रावण सुविद्ययां घातय-घातय, अखिल रुजान् दोषोदयान् कृत कार्यणाभिचारोत्थान (अमुकस्य) देहे स्थितान् अधुना रुज कारकान् चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय-छेदय, भेदय-भेदय, उरु-उरु, छरु-छरु, स्फुट-स्फुट, घे आं क्रौं क्षीं क्षं क्षैं क्षौं क्षः ज्वालामालिनी (अमुकस्य) सौख्यं कुरु-कुरु निरुजं कुरु-कुरु अभिलाषित कामना देहि-देहि ज्वालामालिनीं विज्ञापतये स्वाहा।

।।मंत्र।।

1- "ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी गृध्रगणपरिवृते हुं फट् स्वाहा।"

2- "ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवि सर्वभूतसंहार कारिके जातवेदसि ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट् ।"

3- "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिंहेश्वरि ज्वालामुखी जृम्भिणि स्तंभिनि मोहिनी वशीकरणी परधनमोहिनी सर्वारिष्टनिवारिणि शत्रुगणसंहारिणि सुबुद्धिदायिनि ॐ आं क्रों ह्रीं त्राहि-त्राहि क्षोभय-क्षोभय अमुकं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा।"

ध्यानम्:-

ज्वल ज्जवलन संकाशा माणिक्य मुकुटो ज्ज्वलाम्।
षड्वक्त्रां द्वादशभुजां सर्वाभरण भूषिताम् ।।
पाशांकुशौ खेटखड्गौ चापवाणौ गदाधरौ।
शूलवह्नी वराभीती दधानां करपंकजैः ।।
स्वसमानाभिरभितः शक्तिभिः परिवारिता।
चारुस्मितलसद्वक्त्रसरोजां त्रीक्षणान्विताम् ।।

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413

करन्यास व अंगन्यास निम्नवत् हैं:-

ॐ नमो ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

भगवति ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

ज्वालामालिनी ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

गृध्रगण परिवृते ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुम्।

हुं फट् ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

स्वाहा ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

प्रयोगः- दीपावली की रात्रि से विधिपूर्वक नित्य 11000 हजार जप 29 दिन तक करने से वशीकरण व सर्वकार्य सिद्ध होते हैं। इस विद्या के मंत्र को विशेष संख्या में जप करने से श्मशान प्रयोग, भूतप्रेत-पिशाच तथा समस्त प्रकार के षडयंत्र समाप्त हो जाते हैं। मंत्र का अनुष्ठान करते समय स्तोत्र एवं स्तोत्र के अनुष्ठान के समय मंत्र की माला अवश्य करनी चाहिये।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

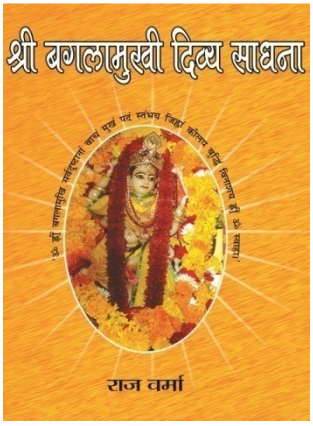

Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413